हिंदी +1 2024-2025

उच्चतर माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेने वाला विद्यार्थी पहली बार सामान्य शिक्षा से विशेष अनुशासन की शिक्षा की ओर उन्मुख होता है। दस वर्षों में विद्यार्थी भाषा के कौशलों से परिचित हो जाता है। भाषा और साहित्य के स्तर पर उसका दायरा अब वर्षों में विद्यार्थी भाषा के कौषलों से परिचित हो जाता है। भाषा और सहित्य के स्तर पर उसका दायरा अब घर आस–पड़ोस, स्कूल, प्रांत और देश से होता हुआ धीरे–धीरे विश्व तक फैल जाता है। वह इस उम्र में पहुँच चुका है कि देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर विचार–विमर्श कर सके, एक ज़िम्मेदार नागरिक को तरह अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके तथा देश और खुद के सही दिशा दे सकने में भाषा की ताकत को पहचान सके। ऐसे दृढ़ भाषिक और वैचारिक आधार के साथ जब विद्यार्थी आता है तो उसे विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की व्यापक समझा और प्रयोग में दक्ष बनाना सबसे पहला उद्देश्य होगा। किशोरावस्था से युवावस्था के इस नाजुक मोड़ पर किसी भी विषय का चुनाव करते समय बच्चे और उनके अभिभावक इस बात को लेकर सबसे अधिक चिंतिरहते हैं कि चयनित विषय उनके भावी कैरियर और जीविका के अवसरों में मदद करेगा कि नहीं। इस उम्र के विद्यार्थियों में चिंतन और निर्णय करने की प्रवृत्ति भी प्रबल होती है। इसी आधार पर वे अपने मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और भषिक विकास के प्रति भी सचेत हेते हैं और अपने भावी अध्ययन की दिशा तय करते हैं इस स्तर पर एच्छिक हिंदी का अध्ययन एक सृजनात्मक, साहित्यिक, संस्कृतिक और विभिन्न प्रयुक्तियों की भषा के रूप में होगा। इस बात पर भी बल दिया जाएगा कि निंतर विकसित होती हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप से बच्चे का रिश्ता बन सके।

इस स्तर पर विद्यार्थियों में भषा के लिखित प्रयोग के साथ–साथ उसके मौखिक प्रयोग की कुशलता और दद्वाता का विकास भी ज़रूरी है। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी अपने बिखरे हुए विचारों और भावों की सहज और मौलिक अभिव्यक्ति की क्षमता हासिल कर सके।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से (1) विद्यार्थी अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुरूप साहित्य का गहन और विशेष अध्ययन जारी रख सकेंगे। (2) विश्वविद्यालय स्तर पर निर्धारित हिंदी साहित्य से संबंधित पाठ्यक्रम के साथ सहज संबंध स्थापित कर सकेंगे। (3) लेखन कौशल के व्यावहारिक और सृजनात्मक रूपों की अभिव्यक्ति में सक्षम हो सकेंगे। (4) रोजगार के किसी भी क्षेत्र में जाने पर भाषा का प्रयोग प्रभावी ढंग से कर सकेंगे। और (5) यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को संचार तथा प्रकाशन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी क्षमता आजमाने के अवसर प्रदान कर सकता है।

उद्देश्य

- सृजनात्मक साहित्य की सराहना, उसका आनंद उठाना और उसके प्रति सृजनात्मक और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- साहित्य की विविध विधाओं (कविता, कहानी, निबंध आदि) महत्त्वपूर्ण कवियों और रचनाकारों, प्रमुख धाराओं और शैलियों का परिचय कराना।
- भाषा की सृजनात्मक बारीकियों और व्यावहारिक प्रयोग का बोध तथा उसका संदर्भ और समय के अनुसार प्रभावशाली ढंग से मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति कर सकना।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधदाओं (धर्म, जाति, लिंग, वर्ग, भाषा आदि) एवं अंतरों के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कराना।
- देश–विदेश में प्रचलित हिंदी के रूपों से परिचित कराना।

- संचार–माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और नवीन विधियों के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
- साहित्य की व्यापक धारा के बीच रखकर रचनाओं का विश्लेषण और विवेचन करने की क्षमता हासिल करना।
- विपरीत परिस्थितयों में भी भाषा का इस्तेमाल शांति के साथ करना।
- अमूर्त विषयों पर प्रयुक्त भाषा का विकास तथा कल्पनाशीलता औ मौलिक चिंतन के लिए प्रयोग करना।

पाठ्य सामग्री और पाठ्य बिंदु

1. काव्य और गद्य संग्राह भाग–1 में प्रमुख रचनाकारों द्वारा लिखित विविध विधाओं से संबद्ध काव्य और गद्य रचनाएँ होगी। ये रचनाकारों और विधाओं की विभिन्न शैलियों से विद्यार्थी की परिचित कराएँगी। रचनाओं में लेखन–परिचय में उनकी साहित्यिक पृष्ठभूमि, साहित्यिक प्रवृत्ति संक्षेप में दी जा सकती है। प्रश्न– अभ्यासों में ऐसे प्रश्न होंगे जो विद्यार्थी को सृजनात्मकता और मौलिकता का विकास कर सके। रचनाओं की प्रस्तुति इस प्रकार होगी कि विद्यार्थी में साहित्य के विकासात्मक स्वरूप ही समझ बन सके।

2. ग्यारहवीं के ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए पूरक पठन का प्रावधान–साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का एक संकलन (भाग–1)

3. रचनात्मक और व्यावहारिक लेखन पर आधारित एक पुस्तक (कक्षा जमा एक और जमा दो दोनों के लिए) इस पुस्तक में निम्न विषय सम्मिलित होंगे।

सृजनात्मक लेखन–कविता, नाटक, डायरी, कहानी

सूचना तंत्र के लिए लेखन–

(क) प्रिंटमाध्यम (समाचार पत्र और पत्रिका)

वृत्त लेखन, पुस्तक–समीक्षा, साक्षात्कार, सामाजिक विषयों पर लेखन

(ख) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम–

रेडियो–दूरदर्शन के लिए लेखन, समाचार लेखन

व्यावहारिक लेखन–

प्रतिवेदन, कार्यसूची, कार्यवृत्त

शिक्षण– युक्तियाँ

इन कक्षाओं में अध्यापकों की भूमिका उचित वातावरण निर्माण में सहायक की होनी चाहिए। उनको भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि–

- कक्षा का वातावरण संवादात्मक की ताकि अध्यापक विद्यार्थी और पुस्तक तीनों के बीच एक रिश्ता बन सके।
- गलत से सही की ओर पहुचने का प्रयास हो। यानी बच्चों को स्वतंत्र रूप से बोलने, लिखने और पढ़ने दिया जाए और फिर उनके होने वाली भूलों की पहचानकर अध्यापक अपनी पढ़ाने की शैली में परिवर्तन करे।
- ऐसे शिक्षण–बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी रहे और अध्यापक भी उनका साथी हो।
- शारीरिक बाधाग्रस्थ विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हे अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में अध्यापक की हर प्रकार की विभिन्नताओं (लिंग, धर्म, जाति वर्ग आदि) के प्रति साकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- सृजनात्मक के अभ्यास के लिए विद्यार्थी से साल में कम से कम दो रचनाएं लिखवाई जाए।

अंतरा भाग–1

गद्य–खंड

1. प्रेमचंद (ईदगाह)
2. अमरकांत (दोपहर का भोजन)
3. हरिशंकर परसाई (टार्च बेचनेवाले)
4. रांगेय राघव (गूँगे)
5. सुधा अरोड़ा (ज्योतिबा फुले)
6. ओमप्रकाश वाल्मीकि (खानाबदोश)
7. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' (उसकी माँ)
8. भारतेंदु हरिश्चंद्र (भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है?)

काव्य–खण्ड

कबीर	:–	अरे इन दोहुन राह न पाई
		बालम, आवो हमारे गेह रे
सूरदास	:–	खेलन में को काकों गुसैयाँ
		मुरली तऊ गुपालहिं भावति
दवे	:–	हँसी की चोट
		सपना
		दरबार
सुमित्रानंदन पंत	:–	संध्या के बाद
महादेवी वर्मा	:–	जाग तुझको दूर जाना
नागार्जुन	:–	बादल को घिरते देखा है
श्रीकांत वर्मा	:–	हस्तक्षेप
धूमिल	:–	घर में वापसी

अंतराल भाग–1

हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी

- बड़ौदा का बोर्डिं स्कूल
- रानीपुर बाज़ार

मकबूल फ़िदा हुसैन

आवारा मसीहा

- दिशाहारा

विष्णु प्रभाकर

(क)	**अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश बोध)**
(ख)	**रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन**
(ग)	**अंतरा, भाग–1 (काव्य भाग)** **(गद्य– भाग)** **पूरक पुस्तक, भाग–1**

क. अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश बोध)

1. गद्यांश पर आधारित चार लघूतरात्मक प्रश्न तथा शीर्षक का चुनाव
2. काव्यांश पर आधारित पांच लघूतरात्मक प्रश्न

ख. रचनात्मक तथा व्यावहारिक लेखन

निर्धारित पुस्तक के आधार पर सृजनात्मक लेखन से संबंधित प्रश्न
निबंध
पत्र
व्यावहारिक लेखन पर प्रश्न
प्रतिवेदन, कार्यसूची, कार्यवृत्त इत्यादि

ग. अंतरा, भाग–1 (काव्य भाग)

सप्रसंग व्याख्या
कविता के कथ्य और काव्य–सौंदर्य पर प्रश्न
काव्य पर प्रश्न
काव्य पर–सौन्दर्य पर
किसी एक कवि का परिचय
जीवन परिचय
रचना–परिचय
काव्य–शिल्प की विशेषता

गद्य भाग

सप्रसंग व्याख्या
पाठों की विषय वस्तु पर आधारित से प्रश्न
पूछे गये लेखकों में से किसी एक का परिचय
(जीवन–परिचय, रचना–परिचय, भाषा–शिल्प की विशेषताएं)

पूरक पुस्तक, भाग–1

विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न
विविध विधाओं पर आधारित बोधात्मक प्रश्न

निर्धारित पुस्तकें :–

(1) अंतरा भाग–1	(हि0 प्र0 स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)
(2) अंतराल	(हि0 प्र0 स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)
(3) अभिव्यक्ति और माध्यम	(हि0 प्र0 स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित)